रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रुपनगढ (अजमेर) राज.

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परवतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

B.A II Year हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र

पूर्णांक 100

1. एक प्रश्न व्याख्याओं से सम्बन्धित तीन व्याख्याएं (नाटक, निबन्ध, एकांकी)
2. तीन प्रश्न आलोचनात्मक
3. एक प्रश्न निबन्ध, नाटक, व एकांकी के संक्षिप्त आलोचनात्मक विकास क्रम एवं प्रमुख रचनाकारों से सम्बन्धित

① 9 निबन्ध →

1. साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास
2. कवि कर्तव्य
3. तुलसी में सामाजिक मूल्य
4. भारत एक है
5. कवि तेरा भोर आ गया है
6. राष्ट्र का स्वरूप
7. मानस की धर्म भूमि
8. पार्थिव धर्म
9. राजस्थानी साहित्य में राष्ट्रीय भावना

② नाटक → रक्तध्वज - डॉ राजेन्द्र मोहन भटनागर

③ 6 एकांकी →

नया पुराना उपेन्द्रनाथ अश्क
दीपदान - रामकुमार वर्मा
बीमार का इलाज - उदयशंकर
भोर का तारा -
ईद और दीवाली
सबसे बड़ा आदमी

नि + बंध

निबन्ध :-

एकत्रीकरना, संचयकरना

परिभाषा → निबन्ध एक रचना शैली है जिसमे लेखक किसी विषय पर व्यक्तिगत ढंग से विचार करता है — डॉ दशरथ ओझा

* किसी एक विषय को लेकर सम्पूर्ण जानकारी
* निबन्ध गद्य की कसौटी है
* निबन्ध गद्य काव्य की मर्यादित विधा है

निबन्ध के प्रकार

- भावात्मक निबन्ध
  - कल्पना प्रधान
  - अनुभूति प्रधान
  - हास्य व्यंग्य प्रधान
  - धारा शैली
  - तरंग शैली
  - विक्षेप शैली
- (i) आलोचनात्मक
  (ii) विवेचनात्मक
  (iii) गवेषणात्मक
- वर्णनात्मक
- ललित निबन्ध
- विवरणात्मक निबन्ध

साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है

└ बालकृष्ण भट्ट

जन्म – 1844 मृत्यु – 1914

यह निबन्ध भट्ट जी का आलोचनात्मक विषयक चिन्तन का परिचायक है हिन्दी आलोचना के इतिहास में सम्भवत यह पहला निबन्ध है जो साहित्य के स्वरूप पर सही तथा व्यापक दृष्टि से विचार करता है

भट्ट जी उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया की वेद हमारे आरम्भिक जीवन में व्याप्त उदारता निष्कपट व्यवहार, भोलापन जैसे गुणो को अभिव्यक्त करता है, जैसे – जैसे समाज आगे बढ़ता है जटिलताओ और विकृतियो का शिकार होता है वैसे – वैसे साहित्य भी इन प्रवृत्तियो को अभिव्यक्त करता चलता है साहित्य विकृतियो के लिए सचेत भी करता है

* ऐतिहासिक दृष्टिकोण
* साहित्य की महत्वता उपादेयता पर भी अपने विचार व्यक्त करते चलते है।

निबन्ध मे व्यक्त विचार → ① साहित्य मे सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति

② वेद साहित्य मे सामाजिक तत्व
③ उपनिषद् साहित्य मे सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति
④ महाकाव्यो मे सामाजिक जीवन
⑤ प्राकृत साहित्य मे सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति
⑥ पुराण साहित्य मे सामाजिकता
⑦ हिन्दी साहित्य मे सामाजिक जीवन का विकास

कवि कर्तव्य

↳ महावीर प्रसाद द्विवेदी

जन्म - 1864 देहावसान - 1938

आधुनिक हिन्दी साहित्य के गद्य साहित्य के युग विधायक द्विवेदी जी ने - संस्कृत, हिन्दी, अरबी, फारसी अंग्रेजी, गुजराती, मराठी अनेक भाषाओं के विद्वान थे

1903 - सरस्वती पत्रिका का सम्पादन

* खड़ी बोली के काव्य रचने की दिशा में कवियों का मार्ग प्रशस्त किया
* 9 मौलिक काव्य 8 कृतियों का अनुवाद

रचनाएं → साहित्यालाप, आलोचनांजलि, साहित्य सीकर, विज्ञान वार्ता, वाग्विलास, विचार विमर्श, गद्य कृतियां 50

* रीतिकालिन प्रवृत्तियों के विरोधक के
* आस्तिकता, आदर्शवादिता, न्यायनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, लोक संग्रह, आत्मसंयम, उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे.

उनके निबन्ध विषय वैविध्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं वे सरल किन्तु व्याकरण सम्मत हिन्दी लिखने के पक्षधर थे।

कवि कर्तव्य

निबन्ध परिचय

द्विवेदी जी ने यह निबन्ध कवियों को समझाने के लिए लिखा है कि उन्हें किस प्रकार की कविता लिखनी चाहिए।

वे कवियों से आग्रह कर रहे हैं कि वे नये-नये विषयों पर काव्य रचना करें तथा अपने काव्य में नये-नये छन्दों का प्रयोग करें जरूरी नहीं की कविता में तुकान्त ही हो किन्तु कविता में अर्थ सौन्दर्य आवश्यक है कवि की कविता को प्रभावशाली बनाने या कवि पद की प्राप्ती के लिए चार स्तम्भ बताए हैं जो निम्न हैं →

(1) छन्द प्रयोग
(2) भाषा प्रयोग
(3) अर्थ सौरस्य
(4) विषय चयन

↳ कवि के कर्तव्य हैं

① कवि का अवतारी रूप ← समाज कल्याण के लिए
② हिन्दी कवि का कर्तव्य
③ कविता के गुण

Q. कवि को अवतार क्यों कहा है?

Q कवियों के कर्तव्य गुणों की विवेचना कीजिए

तुलसी के सामाजिक मूल्य

└ डॉ रामविलास शर्मा

कवि परिचय →

जन्म - 1912 देहावसान - 2001

प्रगतिवाद समीक्षा के प्रमुख स्तम्भ डॉ रामविलास जी जन्म U.P. यह अंग्रेजी के अध्यापक थे

* इनका प्रथम सम्बन्ध अंग्रेजी साहित्य से।
* हिन्दी साहित्य मे उनकी विरत अनुपमेय है
* इन्होंने हिन्दी जगत मे आलोचना साहित्य को नया रूप दिया है
* ऐसा निर्भीक व्यक्ति जब कविता के क्षेत्र मे उभरता है तो उसकी कल्पना शक्ति और प्रकृति निरीक्षण क्षमता को नजरन्दाज नही किया जा सकता है
* कविता के क्षेत्र मे वे उतने ही कोमल सौन्दर्य - पारखी और ग्रामीण प्रकृति के अंचल मे बिखरी रूप तरंगो के चितेरे थे
* डॉ शर्मा के निबन्धो को विचारात्मक साहित्य की संज्ञा प्रदान की जा सकती है -
* उनके निबन्ध के तीन वर्ग है →

① कृति सम्बन्धी ② कृतिकार सम्बन्धि
③ साहित्य प्रवृति सम्बन्धी

(2)

निबन्ध परिचय → डॉ रामविलास शर्मा ने तुलसी के काव्य की प्रगतिवादी समीक्षा की है तथा स्थापित किया है कि महाकवि तुलसी अपने काव्य में उन सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं इसलिए तुलसी का काव्य हमें आज भी प्रेरणा देता है

* तुलसी मानव प्रेम की प्रतिष्ठा करते हैं
* वह पूरे समाज को एक सूत्र में बांधते हैं

सामाजिक मूल्यों से तात्पर्य → समाज द्वारा स्वीकृत नियम जिनके पालन की अपेक्षा समाज के प्रत्येक व्यक्ति से की जाती है। समाज में प्रचलित परम्पराएं विश्वास रीति रिवाज तथा लोकाचार इसी श्रेणी में आते हैं सामाजिक मूल्य समाज के लोगों के कार्य व व्यवहारों को निश्चित ही नहीं करते बल्कि उन्हें नियंत्रित भी करते हैं।

निबन्ध के विचार निम्न शीर्षकों से स्पष्ट होते हैं

(1) भक्ति आन्दोलन की विशेषता
(2) भक्ति आन्दोलन की व्यापक सीमा
(3) भक्ति आन्दोलन और भावात्मक एकता
(4) राष्ट्रीय एकता और जनतंत्र
(5) आत्म निवेदन और विनय का साहित्य
(6) भक्ति आन्दोलन अखिल भारतीय सांस्कृतिक आन्दोलन
(7) निष्क्रिय भाव से ग्रसित तुलसी साहित्य
(8) तुलसी साहित्य लोक संस्कृति का अभिन्न अंग

भारत एक है -

रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय →

जन्म - 1908 देहावसान 1974 ई.

ओज तथा तेज के कवि के रूप में ख्यात राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर भारत की राष्ट्रीय चेतना के सच्चे प्रतिनिधि कवि थे उनके काव्य में जहाँ भारत के गौरव का गायन है वहीं शान्ति, बंधुत्व मनुष्यता तथा युद्ध विरोध का संदेश है वे प्रेम में भी अध्यात्म स्थापित करते हैं "उर्वशी" इसका प्रमाण है संस्कृति के चार अध्याय - अमूल्य ग्रन्थ है

दिनकर जी ने साहित्य संस्कृति धर्म नैतिकता भाषा आदि विषयों पर मौलिक निबन्ध लिखे हैं

रचनाएं →

निबन्ध परिचय → भारत एक है निबन्ध दिनकर जी के बहुप्रशंसित ग्रन्थ संस्कृति के चार अध्याय से लिया गया है इस निबन्ध में उनकी राष्ट्रीय भावना को देखकर अभिव्यक्ति मिली है इस निबन्ध में उन्होंने ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक दृष्टि से भारत की एकता के सूत्रों की पड़ताल करते हुए यह प्रमाणित किया है कि विविधता में एकता भारत की बहुत बड़ी शक्ति रही है

निबन्ध के विचार निम्न शीर्षकों से स्पष्ट

1 विविधता में एकता
2 भारतीय दर्शन और साहित्य में समानता
3 संस्कृति एवं सभ्यागत समानता
4 धार्मिक विश्वास एवं प्रत्यय की एकता
5 भौगोलिक सीमाओं के आधार पर एकता
6 विशिष्ट पहचान एकता का आधार

कवि तेरा शोर आ गया

कुबेरनाथ राय

कवि परिचय :-

जन्म 1933 देहावसान 1995

श्री कुबेरनाथ राय का नाम अद्यतन ललित निबन्धकारों की श्रेणी में लिया जाता है आपने सैकड़ों निबन्ध लेख, रिपोर्ताज, आदि लिखकर हिन्दी को समृद्ध किया है

* इनकी पृष्ठभूमि पुरातन है किन्तु इनके विचार भाव, भाषा, कल्पना, शैली सभी आधुनिकता के पंख लगाकर पद्य साहित्य के उन्मुक्त गगन में विचरण करते हैं
* निबन्धों ने हिन्दी की कई पत्रिकाओं को सुसज्जित किया है

प्रमुख निबन्ध संग्रह → प्रिया नीलकंठी, रस आखेटक गंधमादन, निषाद, बाँसुरी, विषादयोग और कामधेनु आदि

* निबन्ध विधा → भावनात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक

निबन्ध परिचय → प्रतिनिधि ललित निबन्ध है
कवि के मूल लक्ष्यो की ओर संकेत किया
लेखक कहता है कि जागरण प्रकृति का मूल स्वभाव है
प्रातःकाल सम्पूर्ण प्रकृति अपने - आप चैतन्य हो
जाती है

भोर की किरणे मुर्गे का बांग कवि को भी
जगाता है उसे उसका सही लक्ष्य समझाती है
कवि का कार्य सरल नही है क्यो कि वही तो
सत्य बोलने का साहस कर सकता है- वही प्रेम
का संदेश दे सकता है वही शोषण और
अत्याचार का विरोध कर सकता है कवि का
असली कर्म यही है - प्रेम का सन्देश और
अन्याय का विरोध

1. प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन
2. कवि के लक्ष्यो का निर्धारण
3. कवि का सर्वोच्च स्थान
4. समाज को नई दिशा प्रदान करना
5. सामाजिक समस्याओं का निवारण
6. कवि को सामर्थवान बताना

राष्ट्र का स्वरूप

वासुदेवशरण अग्रवाल

कवि परिचय → जन्म 1904 देहावसान 1966

साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व और इतिहास के अप्रतिम अध्येयता वासुदेवशरण अग्रवाल ने लखनऊ विश्वविद्यालय से M.A. P.H.D. तथा D.Le. की उपाधियाँ प्राप्त की

* सेंट्रल एशियन एन्टिक्विटीज म्यूजियम के सुपरिन्टेन्डेन्ट और भारतीय पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष पद का कार्यभार बड़ी सफलता और प्रतिष्ठा के साथ निष्पन्न किया।

* उन्होंने कालिदास के मेघदूत
बाणभट्ट के हर्षचरित की नवीन पीठिका

कृतियाँ → उरू ज्योति, कला और संस्कृति,
कल्पवृक्ष, कादम्बरी, पद्मावत का संजीवनी भाष्य, पाणिनीकालीन भारत, पृथ्वीपुत्र, भारत की मौलिक एकता

निबन्ध परिचय → राष्ट्र का स्वरूप शीर्षक निबन्ध डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल का एक गम्भीर और सास्कृतिक निबन्ध है जिसमे उन्होने राष्ट्र के स्वरूप को सर्वथा नयी दृष्टि से परिभाषित किया है।

उन्होने राष्ट्र के तीन प्रमुख अवयव माने है
① भूमि ② जन ③ संस्कृति

भूमि उनकी दृष्टि मे अपार सम्पदा का भण्डार है तथा वह मनुष्य के लिए सब कुछ देने की क्षमता रखती है। पृथ्वी और आकाश के बीच फैली सारी सम्पदा मनुष्य के जीवन को सफल सक्रिय और सार्थक बनाने के लिए है। पृथ्वी पर रहने वाला दूसरा अवयव जन है जिसके हृदय मे राष्ट्रीयता के अंकुर उत्पन्न होते है जन का प्रवाह अनन्त है और वह धरती से अपना सम्बन्ध अपने श्रम की निष्ठा से कर सकता है यही निष्ठा राष्ट्रीय भावना का आधार है।

तीसरा अवयव संस्कृति है जिसमे धरती और जन के सम्बन्ध प्रतिबिम्बित होता है संस्कृति के किसी जन की कल्पना नही की जा सकती है मानव जीवन के वृक्ष का पुष्प संस्कृति है जो जन – जन के बीच समन्वय स्थापित करने मे सहायक होती है।

संस्कृति ही विभिन्न देशो के निवासियो के बीच तादात्म्य उत्पन्न करती है तथा मनुष्य विश्व संस्कृति की ओर इसी तादात्म्य से बढता है।

मानस की धर्म भूमि

रामचन्द्र शुक्ल

कवि परिचय → 1881 जन्म देहावसान 1941

शुक्ल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे तथा उन्होंने कविता, नाटक, आलोचना, अनुवाद, निबन्ध आदि अनेक विधाओं को समृद्ध किया

* हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखकर हिन्दी मे साहित्य इतिहास लेखन की गम्भीर परम्परा का शिलान्यास किया उन्होंने अनेक ग्रन्थो का सम्पादन तथा अनुवाद किया।

शुक्ल के निबन्धो के प्रकार → (1) भावपरक निबन्ध
(2) सैद्धान्तिक निबन्ध
(3) व्यक्तिपरक निबन्ध

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धो मे उच्चकोटी की विचारशक्ति स्थापना शक्ति संवेदनशीलता एवं आदर्शप्रवणता के दर्शन प्राप्त होते है उनके निबन्धो मे विचार तथा भाव एवं विषय तथा व्यक्ति का अद्वितीय समन्वय प्राप्त होता है। विचारात्मक निबन्धकार की दृष्टि से शुक्ल हिन्दी या भारत ही नही प्रत्युत समग्र विश्व के अग्रणी साहित्य स्रष्टाओ मे है

शुक्ल की पारिभाषिक सूक्तियाँ →

(1) भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है

(2) श्रुति द्वारा पूर्ण रूप से निश्चित की हुई व्यापार-परम्परा का नाम ही प्रथम है

(3) अपनी बुराई मूर्खता तुच्छता इत्यादि का एकांत अनुभव करने से वृत्तियो मे जो शैथिल्य आता है उसे ग्लानि कहते है

(4) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है

निबन्ध परिचय :-

शुक्ल का यह निबन्ध (चिन्तामणि भाग 1) में संकलित है आचार्य शुक्ल का व्यक्तित्व आदर्शवादी गाम्भीर्य तथा भारतीय नैतिकता का समुच्चय था तुलसीदास ने जो आदर्श अपने रामचरित मानस ग्रन्थ में स्थापित किये वे शुक्ल के व्यक्तित्व के अनुकूल हैं अतः वे रामचरितमानस की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हैं। मानस की धर्मभूमि निबन्ध में शुक्लजी धर्म के उन आधारभूत तत्वों को रेखांकित करते हैं जिन्हे तुलसी ने रामचरित मानस की कथा में स्थापित किया है तुलसी मानस में जिस धर्म व्यवस्था की स्थापना करते हैं वह मनुष्य को देवत्व प्रदान करता है तथा सभी प्रकार की संकीर्णताओं से मुक्त करता है।

निबन्ध का सार निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट

1. धर्म के स्वरूप का परिचय
2. विश्व धर्म चरम साध्य
3. धर्म का दुरूह रहस्य
4. तुलसी के पूर्ण धर्मस्वरूप राम
5. कर्म ज्ञान और भक्ति के योग में पूर्णता
6. लक्ष्य के अनुसार धर्म की व्यापकता
7. धर्म विविध भूमियों की झाँकी
8. अन्य पात्रों की धर्म भूमि

DATE / /
PAGE

पार्थिव धर्म

पं विद्यानिवास मिश्र

कवि परिचय → 14 जनवरी 1926

जन्म - 1926 देहावसान 2005

शिक्षा → गोरखपुर इंटरमिडिएट

इलाहाबाद विश्वविद्यालय M.A.

गोरखपुर विश्वविद्यालय PHD

रचनाएं → निबन्ध - जो छितवन की छाह

तुम चन्दन हम पानी

कदंब की फूली डाल

आगन का पंछी और बनजारा मन

मैंने सिल पहुचाई

साहित्य की चेतना, वसंत आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है,

कंटीले तारो के आर-पार

कौन तू फुलवा बीननहारी, पानी की पुकार

निबन्ध परिचय → मिश्र जी ने धर्म का वास्तविक अर्थ स्पष्ट करते है वास्तविक धर्म है धारण करना, सहन करना, दूसरो की रक्षा करना तथा दूसरो का पालन करना जैसे पृथ्वी करती है जो काम पृथ्वी का मूल धर्म है वही मनुष्य का भी मूल धर्म है। न्याय की रक्षा और अन्याय के प्रतिरोध के लिए निरन्तर संघर्ष सब कुछ सहकर भी अपना मस्तक ऊँचा रखने का संकल्प निष्ठा और अनन्यता की अग्नि परीक्षा मे खरा निकलकर भी अयाचक और अदीन बने रहने का कठोर आत्मबल स्वयं को अर्पित कर दूसरो को जीवन देने का प्रयास करना यही पार्थिव धर्म है पृथ्वी ही इसे हमे सिखाती है अतः पृथ्वी हमारी सबसे बडी आराध्य है।

Q पृथ्वी धर्म क्या है?

Q. पृथ्वी धर्म के प्रक्रिया – निबन्धकार के अनुसार हम सभी के हृदय मे पृथ्वी के प्रति हमेशा ही अपेय भाव समाया रहता है यही कारण है कि पृथ्वी पर रहने वाले सभी जन पृथ्वी को अपनी धात्री के रूप मे स्वीकार करते है दूसरे शब्दो मे पृथ्वी ममत्व भाव से परिपूर्ण है हम सबकी माँ है।

राजस्थानी साहित्य मे राष्ट्रीय भावना

└ डॉ कन्हैयालाल सहल

कवि परिचय →

जन्म - 1911 देहावसान - 1977

हिन्दी तथा राजस्थानी के प्रख्यात विद्वान मूलतः एक रसवादी आलोचक थे वैसे उन्होने कविताएँ तथा ललित निबन्ध भी लिखे किन्तु उनका प्रमुख क्षेत्र हिन्दी आलोचना और राजस्थानी भाषा मे विविध प्रकार का शोध थे

उन्होने राजस्थानी कहावतो पर अपना शोधकार्य किया तथा राजस्थानी लोक कथाओ के मूल अभिप्रायो पर सर्वथा मौलिक कार्य किया

निबन्धकार के रूप मे डॉ कन्हैयालाल सहल ने छुटे बड़े पैने निबन्ध लिखकर अपनी पहचान बनायी

पाठ परिचय :— प्रस्तुत संग्रह मे संकलित राजस्थानी साहित्य मे राष्ट्रीय भावना राजस्थानी साहित्य से सम्बन्धित आलोचनात्मक निबन्ध है। लेखक ने इसमे राजस्थानी साहित्य मे विद्यमान मृत्यु से जूझने की वीर भावना पर प्रकाश डालते हुए राजस्थान के वीरो की देश-प्रेम आत्म बलिदान एवं स्वातन्त्र्य भावना को सहज ही उजागर कर दिया है राजस्थानी साहित्य से दिए गए विभिन्न उदाहरणो या

राजस्थानी वीरो की विशेषता →

(1) स्वदेश प्रेम प्रेम (2) कर्त्तव्यनिष्ठा

(3) वीर शौर्य पराक्रम ओज के धनी

(4) मरण को मंगल मानने वाले

(5)

:- एकांकी :-

एकांकी गद्य साहित्य की एक गद्य विधा है आकार की लघुता एवं प्रभावशीलता की दृष्टि से एकांकी की रचना विधान अपनी पृथक् पहचान रखता है एकांकी की मूल संवेदना को त्वरा के साथ कलात्मक ढंग से चरम सीमा तक पहुंचाया जा सके।

एकांकी नाटक एक गतिमान उद्देश्य लेकर चलता है

एकांकी के मूल व आवश्यक तत्व —

(1) आकार छोटा होना चाहिए

(2) घटना के किसी अंश का ऐसा चमत्कारपूर्ण वर्णन चित्रण किया जाना

(3) एकांकी की घटनाएं क्षिप्रगति से घटित होती हैं

(4) एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित होती है.

(5) एकांकी के कथोपकथन, सहज सरल व संक्षिप्त विषयवस्तु को त्वरित गति देने में सक्षम

(6) दृश्य विधान की संख्या निश्चित नहीं है

एकांकी के भेद :-

1. घटनाप्रधान एकांकी
2. चरित्रप्रधान एकांकी
3. समस्याप्रधान एकांकी
4. हास्य व्यंग्य प्रधान एकांकी
5. ऐतिहासिक एकांकी
6. सामाजिक राजनीतिक एकांकी
7. पौराणिक एकांकी
8. मनोवैज्ञानिक एकांकी

हिन्दी एकांकी का विकास

भारतेन्दु युग	द्विवेदी युग	प्रसाद युग	वर्तमान युग
रूढ़ियों, रीतिरिवाजों परम्पराओं पर व्यंग्य	पाश्चात्य एकांकी का प्रभाव आ गया था एकांकी और प्रभावशाली बन गई थी	"एक घूँट" प्रसाद द्वारा रचित एकांकी	बादल की मृत्यु

नया पुराना — उपेन्द्रनाथ अश्क

आदर्श यथार्थ पर रचा गया एकांकी

एकांकी के पात्र → देवदत्त — प्रतिमा (पत्नी)
रविदत्त — आभी (पत्नी)
लिली की माँ

संकलन त्रय — समय, स्थान, घटना

एक नही चलने वाला व्यक्ति (अचल व्यक्ति

समय- सुबह 6.30 बजे

स्थान- देवचन्द के मकान का कमरा

एकांकी के पात्र

देवचन्द (देवदत्त) - नायक - स्कूल संचालक एवं प्रधानाध्यापक

रविदत्त - देवचन्द का मित्र वैद्य

प्रतिमा - देवचन्द की पत्नी गृहणी

आभी - रविदत्त की पत्नी

कमल - रविदत्त ~~की~~ ~~पत्नी~~ का मित्र

लिली की माँ - स्कूल की छात्रा

अचल बैंक रखने वाला व्यक्ति

गजेन्द्र -

एकांकी का दृश्य संपादन — कमरे के का दृश्य जिसमें एक व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है साधारण सजवट

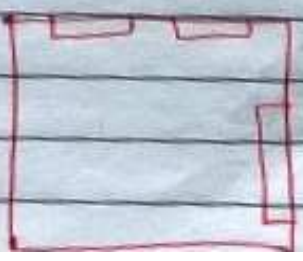

दीपदान

— डॉ रामकुमार वर्मा

पात्र - परिचय =>

कुंवर उदयसिंह => महाराणा सांगा का उत्तराधिकारी
आयु = 14 वर्ष ।

चन्दन => धाय माँ पन्ना का पुत्र, आयु 13 वर्ष

बनवीर => पृथ्वीराज का दासी - पुत्र। आयु 32 वर्ष

कीरत => जूठी पत्तल उठाने वाला बारी, आयु 50 वर्ष

पन्ना => कुंवर उदयसिंह का संरक्षण करने वाली धाय। चन्दन की माँ
आयु 30 वर्ष ।

सोना => रावल सरूपसिंह की अत्यन्त रूपवती लड़की। कुंवर के साथ
खेलने वाली । आयु 16 वर्ष ।

सामली => अन्तःपुर की परिचारिका । आयु 28 वर्ष

काल => सन् 1536 ई. ।

समय => रात्रि का दूसरा पहर ।

स्थान => कुंवर उदयसिंह का कक्ष, चित्तौड़ ।

प्रस्तुत एकांकी मे जीवन मे दीपदान के महत्व को बताया है एक स्त्री के लिए उसका पुत्र दीपक के समान होता है पर पन्ना ने अपने पुत्र का बलिदान दिया था चन्दन को उदय सिंह की जगह लिटाया गया था चन्दन ने अपने दीपक का त्याग करके उदयसिंह की रक्षा करी थी।

बीमार का इलाज

उदयशंकर भट्ट

एकांकी के पात्र :-

लेखक परिचय

1. चन्द्रकान्त - आगरा का रईस आधुनिक
2. कांति - चन्द्रकान्त का पुत्र
3. विनोद - कांति का मित्र
4. शांति - कांति का छोटा भाई
5. सरस्वती - कांति की माँ पति से बिल्कुल अलग स्वभाव की
6. प्रतिभा - कांति की बहन
   प्रकाश मोती, उम्र 24 वर्ष
7. अन्य पात्र → डॉ गुप्ता
   डा नानकचन्द, वैद्य हरिचन्द्र
   बूढ़ा नौकर सुखिया पण्डित पुजारी

जन्म 3 अगस्त 1898

देहावसान - 1966

जन्मस्थान - इटावा

काशी विश्वविद्यालय से B.A किया था

रचनाएं → काव्य संग्रह

तक्षशिला, राका, मानसी अमृत और विष,

उपन्यास → सागर, लहरें, और मनुष्य, लोक-परलोक शेष अशेष

एकांकी → समस्या का अंत, परदे के पीछे अन्धोदय,

एकांकी का विषय →

1. संवेदना, यथार्थ,
2. वर्तमान समाज की परिस्थितियों का वर्णन
3. सदुपदेश, जीवन का विश्लेषण
4. निर्मल हास्य
5. प्राचीन संस्कार के साथ नवीन यथार्थ को मानना

भोर का तारा

↳ जगदीशचन्द्र माथुर

लेखक परिचय →

ऐतिहासिक एकांकी

पात्र → शेखर, माधव, छाया, देवदत्त,

प्रमुख पात्र शेखर → शेखर का मित्र - माधव

* शेखर राष्ट्रकवि है उसकी कविता मे राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव है

* शेखर देवदत्त की बहन छाया से प्रेम करता है

* उज्जैनी का कवि शेखर है माधव के साथ पहली बार छाया को देखा जब भोर का तारा काव्य की रचना कि

* इस एकांकी की कथावस्तु सन् 455 ईस्वी के समीप उज्जयिनी के गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त से सम्बन्धित है। इस एकांकी की कथावस्तु बड़ी रोचक है पूरी एकांकी की कथावस्तु दो दृश्यों मे विभाजित है

दृश्य एक → शेखर उज्जयिनी का एक प्रतिभाशाली कवि है व गुप्त साम्राज्य के एक वरिष्ठ कर्मचारी माधव का मित्र है वह अपने घर मे बैठा कविता लिखने मे तल्लीन है

① होली और ईद → सेठ गोविन्ददास
② सबसे बड़ा आदमी →

पात्र परिचय — राम - एक बच्चा
हमीदा - एक बच्ची (५ वर्ष)
रतना - राम की माँ
खुदाबख्श - हमीदा का पिता
स्थान - एक नगर

(प्रथम) पहला दृश्य - शाम का समय दो बच्चे राम और हमीदा हमीदा राम को ईद की सेवईया खिलाती है बच्चो के आस-पास माता पिता का झगड़ा हो जाता है हिन्दू मुसलमान का झगड़ा हो जाता है

(रात) द्वितीय दृश्य → हिन्दू मुसलमानो के अलगाव के कारण रतना के घर को आग लगा दी जाती है खुदाबख्श आग से दोनो बच्चो को बचाता है

तीसरा दृश्य → प्रातःकाल दोनो बच्चे फिर से साथ खेलने लगते है रतना, खुदाबख्श दोनो बात करते है कि बच्चो ने हमे हिन्दू - मुसलमान से भाई बहन बना दिया

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ़, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

Radhamam

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय

राई का बाग रूपनगढ़ (अजमेर)

हिन्दी साहित्य - IInd year

प्रथम प्रश्न पत्र - रीतिकालीन काव्य

अवधि 3 घंटे उत्तीर्णांक 36 पूर्णांक - 150

अंक योजना

(1) एक प्रश्न व्याख्याओं से सम्बन्धित तीन व्याख्याएं - 24 अंक

(2) तीन प्रश्न आलोचनात्मक - 48 अंक

(3) एक प्रश्न रीति काव्य सिद्धान्त विषयक

रीति का तात्पर्य, नायक-नायिका भेद, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध

व रीति मुक्त काव्य रीति मे काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय

रस अलंकार सम्प्रदाय एवं परम्परा - 16 अंक

(4) एक प्रश्न रीतिकालीन काव्य का इतिहास - 12 अंक

निम्नांकित 8 कवियो के चयनित अंश

(1) केशव (5) सेनापति

(2) बिहारी (6) भूषण

(3) घनानन्द (7) मतिराम

(4) देव (8) वृन्द

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बास, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

हिन्दी साहित्य का इतिहास

- आदिकाल
  - 1050 – 1375
- मध्यकाल
  - 1375 – 1900
  - पूर्व मध्यकाल
    - भक्तिकाल
    - 1375 – 1700
      - सगुण काव्यधारा
        - राम
        - कृष्ण
      - निर्गुण काव्य धारा
        - संत (ज्ञानाश्रयी)
        - सूफी (प्रेमाश्रयी)
  - उत्तरमध्यकाल
    - रीतिकाल
    - 1700 – 1900
      - रीतिबद्ध धारा
        - केशव
        - भूषण
        - देव
        - मतिराम
        - चिंतामणि
        - वृंद
        - रहीम
        - जसवंत सिंह
        - भिखारीदास
        - सेनापति, भूपति
      - रीतिमुक्त धारा
        - घनानन्द
        - आलम
        - बोधा
        - ठाकुर
        - द्विजदेव
      - रीतिसिद्ध धारा
        - बिहारी
- आधुनिककाल
  - 1900 से अब तक
  - (1) भारतेन्दु काल
  - (2) द्विवेदी काल
  - (3) छायावाद
  - (4) प्रयोगवाद
  - (5) प्रगतिवाद

मोबाइल : 9314618091
पुर/2008-09
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

रीतिकाल की प्रेरक परिस्थितियां :-

अन्य नाम → कलाकाल, अलंकृतकाल, रसिककाल

राजनीतिक स्थिति → ① 1700 मे भारत के शासन पर मुगल सम्राट शाहजहाँ का आधिपत्य

② शाहजहाँ सहिष्णु शासक था, सांस्कृतिक और कलागत उ...

③ 1775 मे शाहजहाँ के बिमार होने पर उनके गदी का युद्ध

④ औरंगजेब सिंहासन पर आरूढ – अशान्ति व संघर्ष का वातावरण उत्पन्न।

⑤ औरंगजेब का शासनकाल 1715 – 1764 तक

⑥ समस्त देश युद्ध से आक्रांत था।

⑦ बुन्देलखण्ड मे छत्रसाल, दक्षिण मे शिवाजी, राजस्थान मे राजपूत

⑧ देश पर अनेक भयंकर विदेशी आक्रमण हुए

⑨ हिन्दू और मुसलमानो मे अलगाव

समाज परिस्थिति :-

① समाज वर्गों मे विभक्त था शोषक व शोषित

② दीन प्रजा सर्वदासत्रस्त होकर त्राहि-त्राहि कर...

③ स्त्री विलासिता का साधन थी।

④ स्त्री पराधीन, कामिनी मात्र थी।

⑤

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

③ धार्मिक परिस्थिति :- ① प्रधान धर्म - हिंदू और मुसलमान
② दोनों प्राय परस्पर विरोधी थे
③ धार्मिक पतनता ④ बाह्य आडम्बरों की अधिकता
⑤ भक्ति संप्रदाय जनता के मार्गदर्शन की क्षमता खो बैठा अपने प्रदर्शन के साधन बन गए

④ साहित्यिक स्थिति :- ① रीतिकाल का अधिकांश साहित्य राजाश्रय और फलस्वरूप चाटुकारिता का साहित्य है
② कविता कवि अर्थोपार्जन का भी साधन बन गई थी
③ भूषण की पालकी को छत्रसाल ने कंधा दिया था
④ केशव को 21 गांवों की जागीर मिली थी
⑤ बिहारी को एक दोहे की एक अशर्फी मिलती

— यह सब इस बात का प्रमाण है कि राजाओं को प्रसन्न करने के लिए ही साहित्य की रचना की जाती है।

→ रीतिकाल की सामान्य विशेषताएँ :-

① शृंगारिकता
② ऋतु वर्णन
③ नायिका भेद वर्णन
④ नख - शिख वर्णन
⑤ अलंकरण की प्रवृत्ति
⑥ ब्रजभाषा की प्रधानता
⑦ लक्षण ग्रन्थों का निर्माण
⑧ मुक्तक शैली का प्राधान्य
⑨ भक्ति और नीति
⑩ आचार्यत्व का आग्रह
⑪ कला पक्ष आग्रह

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
(संचालित मधु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id- - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

काव्यशास्त्रीय परम्परा

रीति का तात्पर्य → सामान्यतः रीति का अर्थ ढंग शैली पद्धति, प्रणाली मार्ग या पथ होता है। काव्यशास्त्र में भी ये अर्थ स्वीकृत हैं किन्तु इनका तात्पर्य पृथक है यहा रीति से तात्पर्य प्रकार की विशिष्ट रचना से है। विशिष्ट का अर्थ है गुणों से युक्त

आचार्य वामन → रीति को काव्य की आत्मा को स्वीकार किया गया है "रीतिरात्मा काव्यस्य" वामन रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य थे रीति या शैली को ही काव्यात्मा के रूप में स्वीकार किया।

रीति शब्द की व्युत्पत्ति :- रीति — रीङ् धातु क्त इसका अर्थ मार्ग पथ या गति। सरस्वती कण्ठाभरण में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है — अभिव्यक्ति के विभिन्न मार्ग होते हैं लेखक कवि अपनी रुचि के अनुसार इन मार्गों का अनुसरण करते हैं। रीति शब्द वैभिन्य का द्योतक है। वामन से पहले रीति के स्थान पर मार्ग शब्द का प्रयोग किया जाता था। आजकल हिन्दी में इसके लिए शैली शब्द का प्रयोग होता है।

शैली शब्द लेखक के स्वभाव की ओर संकेत करती है। प्राचीन संस्कृत शास्त्र में शैली शब्द व्याख्यान पद्धति के लिए प्रयुक्त किया जाता।

जिस प्रकार कामिनी के अंगों का एक निश्चित संगठन सौन्दर्यशील होता है उसी प्रकार पदों की नियमबद्ध संघटना भी सुन्दर होती है और उसे ही रीति कहते हैं।

र. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

: रीति के प्रमुख भेद :-

गौड़ी रीति :- ओज के शब्दों मे गौडी समास-प्रचुर ओज तथा कांति गुण समन्वित उद्भट रचना है सुदीर्घ समास, पादानुप्रास, योगरूढि, परम्परा, परिस्फुट पदबन्ध, नादुच्चार वृत्ति के साथ ओज और कांति गुण युक्तता इस गौड़ी रीति के लक्षण है वामन ने गौडी का स्वरूप यह बतलाया है

समस्तात्युद्भटपदाओज कांतिगुणान्वितम्
गौडीयामिति गायन्ति रीति रीति विचक्षण

आचार्य विश्व नाथ के अनुसार

'बहुतर समासयुक्ता सुमहाप्राणाक्षराच गौडिया
रीतिनुप्रासमहिमपरतंत्रा स्तोकवाक्या च'

इन सभी परिभाषाओ का निष्कर्ष यही है कि ओज और कांतिगुण समन्वित दीर्घ समासयुक्त रचना गौडी है।

पान्चाली रीति :- यह वैदर्भी और गौडी के मध्य की रीति है। कुछ आचार्यो ने इसे मध्यम नाम से अभिहित किया है यह मन्दवाहिनी सरिता की तरह प्रवाहित होती है। अनतिदीर्घ समास पादानुप्रास, अनतिस्फुट बन्धन तथा ओज कांति गुण समन्वित इसके प्रमुख लक्षण है। इसमे सुकुमार वर्णों की प्रचुरता होती है। माधुर्य सौकुमार्य और कांति इसके अन्तर्भूत गुण है।

वैदर्भी रीति :- यह वह रीति है जिसका सम्बन्ध माधुर्य गुण और मधुरावृति से है यह समासरहित होती है तथा इसमे कोमल सरस भावनाओ की अभिव्यक्ति की जाती है।

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

नायक भेद :-

नायक का सामान्य अर्थ ⇒ मार्गदर्शक, स्वामी या प्रधान रीतिकालीन आचार्यों ने नायक को शृंगार रस का आलम्बन कहा है विश्वनाथ ने नायक की परिभाषा देते हुए बताया है दाता कृतज्ञ प्रतिष्ठित कुलीन लक्ष्मीवान लोगों के अनुराग का पात्र रूप यौवन और उत्साह से युक्त तेजस्वी चतुर और सुशील पुरुष काव्यों में नायक होता है।

नायक के भेद

स्त्री पुरुषों के सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर	गुण व प्रकृति के आधार पर	कुल के आधार पर	नाटकादि कथावस्तु के आधार पर
(1) पति – नायिका का विधिवत पाणिग्रहण करने वाला	(1) उत्तम – वह नायक जो अपने मान की चिन्ता न करके मनुहार करता है	(1) दिव्य	(1) धीरोदात्त – वह नायक जिसमें दान, दया, सम्मान/शुभ कार्यों के प्रति
(2) उपपति – जो पति स्त्री के आचार धर्मानुष्ठान को नष्ट करने वाला	(2) मध्यम – न उत्पन्न उत्कृष्ट और न अत्यन्त निकृष्ट उसे मध्यम नायक	(2) अदिव्य	(2) धीरप्रशान्त – त्यागी, ... नायक के गुण
(3) वैशिक – वह नायक जो वेश्या का उपभोग करे	(3) अधम – जो निर्लज्ज, निष्ठुर, स्वार्थी होता है	(3) दिव्यादिव्य	(3) धीरललित – निश्चिन्त ... अति कोमल स्वभाव
			(4) धीरोद्धत – मायावी प्रचण्ड

① मानी नायक ② चतुर नायक

③ नायिकाभास ④ प्रोषित नायक

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

नायिका भेद

नायिका का सामान्य अर्थ → नायक की पत्नी, यौवन रूप गुण से सम्पन्न, स्त्री, नाटक उपन्यास की प्रधान प्राणी

काव्य शास्त्र मे अर्थ → श्रृंगार रस का आलम्बन
रीतिकालिन आचार्यों ने यौवन तथा रूप गुण आदि से सम्पन्न स्त्री को नायिका कहा है

नायिका के भेद

धर्म या सामाजिक बंधन के आधार पर

(1) स्वकीया
विनय सरलता से युक्त घर के कार्यों मे दक्ष

(2) परकीया
पर पुरूष से छिपे-छिपे प्रेम करने वाली स्त्री

(3) सामान्य
जो नायिका सर्वसाधारण ~~के जो भेद किये गये है~~ लिए सुलभ हो

परिस्थिति एवं अवस्था के आधार पर

(1) स्वाधीन पतिका
रति गुण से आकृष्ट विचित्र विलासो से युक्त

(2) उत्कंठिता
अनेक कार्यों मे व्यस्त पति के न आने पर दुखी

(3) वासक सज्जा
वस्त्रो से अपने को सजाने वाली

(4) अभिसंधिता
जो कलह के कारण नायक से अलग हो गयी है

(5) प्रोषित पतिका
पति परदेश चला गया हो

(6) विप्रलब्धा
संकेतस्थल पर नायक को ना पाए

(7) अभिसारिका
जो स्वयं संकेतस्थल पर जाए

(8) आगम पतिका
पति परदेश से लौट आया हो

गुण प्रकृति के आधार पर

(1) उत्तमा
नायक द्वारा अपमानित करने पर भी मान करे

(2) मध्यमा
प्रियतम का हित करने वाली

(3) अधमा
हित करने वाले प्रियतम के साथ अहित करने वाली

लोक भेद के आधार पर

(1) दिव्य

(2) अदिव्य

(3) दिव्या[illegible]

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(3) अलंकारिकता
(4) ब्रजभाषा की प्रधानता
(5) वीरकाव्य
(6) भक्ति और नीति

रीतिकाल की धाराए

रीतिबद्ध धारा

जिन कवियों ने काव्य रीतियों का पालन करते हुए काव्य रचना की वे रीतिबद्ध कवि कहलाए

रीतिसिद्ध धारा

बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि माने जाते है रीतिकाल मे बिहारी ही एक मात्र ऐसे कवि है जिनको रीतिसिद्ध कवि माना गया है क्योकि उन्होने किसी प्रकार का लक्षण ग्रन्थ नही लिखा ना ही किसी राजा के आश्रित होकर लिखा इनकी बिहारी सतसई मे अनायास ही रीतिकाल की विशेषता आ गई

रीतिमुक्त धाराए

वे कवि जो रीति का सम्पादन करने मे अपनी कवित्व शक्ति का चमत्कार दिखा रहे है वे रितिसिद्ध कहलाए दूसरी तरफ जो रीति के बन्धन से मुक्त थे वे रीतिमुक्त कहलाए

(1) शृंगार का उदात्त चित्रण
(2) प्रेम की पीर
(3) प्रेम का एकान्तिक चित्रण
(4) भावप्रधान संयोग वर्णन
(5) श्री कृष्णलीला का प्रभाव
(6) मुक्तक शैली
(7) अलंकार का प्राधान्य
(8) ब्रजभाषा का प्रयोग
(9) एकान्तिक प्रेम की साधना

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

केशव :-

हिन्दी के प्रमुख आचार्य कवि रीतिकाल के प्रवर्तक

जन्म – 1618 वि. स

मृत्यु – 1680 वि. स

रचनाएं :- रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया
कविप्रिया, रतनबावनी, विज्ञानगीता
. जहांगीर जयचन्द्रिका, वीरसिंहदेव चरित

आचार्य केशव हिन्दी साहित्य के रीतिवादी आचार्यो मे अपना प्रमुख स्थान रखते है थे। अतः उनका काव्य वाकजाल और चमत्कार प्रदर्शन मे उलझ गया है इसलिए वे आचार्य पहले और कवि बाद मे थे इसका कारण चाहे उनकी बौद्धिकता रही है और उनकी घरेलू परिस्थि का भी बहुत योगदान रहा है

उनके घर की शुक सारिकाएं भी संस्कृत बोलती थी स्वयं उन्होंने भी संस्कृत साहित्य का पूर्णरूपेण अध्ययन किया था।

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

DATE / /
PAGE

केशव की रचना में काव्य सौष्ठव
रामचन्द्रिका का काव्य सौष्ठव
केशव के आचार्यत्व की स्पष्टता
संवाद योजना की विशिष्टता

भावपक्ष
1) श्रृंगार रस का वर्णन
2) वीर रस का वर्णन
3) रौद्र रस का वर्णन
4) प्रकृति चित्रण

कलापक्ष
① भाषा — ब्रजभाषा, बुंदेलखण्डी
संस्कृत निष्ठ शब्द
② छन्द योजना - रामचन्द्रिका को छन्दो का अजायबघर कहा गया है
प्रयुक्त छन्द - सवैया, दंडक छन्द
कुंडलिया
③ अलंकार योजना → शब्दालंकार,
अर्थालंकार, दोनो का खूब
④ संवाद योजना → नाटकीय संवाद
चरित्रोद्घाटक कूटनीति संवाद
व्यंग्यात्मक संवाद
नाटकीय संवाद, प्रश्नोत्तर मूलक संवाद

प्र. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

पिता - केशवराय बिहारी :- 1603 बसुआ गोविन्दपुर

बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं इनका जन्म - 1595 ई में ग्वालियर में हुआ

* जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे
* देहावसान - 1663 ई.

रचना - बिहारी सतसई - 719 दोहे

सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर,
देखन मे छोटे लगैं घाव करैं गंभीर ॥

बिहारी रत्नाकर संपादक - जगन्नाथ दास रत्नाकर

बिहारी सतसई का मूल विषय श्रृंगार निरूपण है इसके अतिरिक्त भक्ति व नीति का निरूपण भी हुआ है। अन्य विविध विषयों में ज्योतिष आयुर्वेद आदि है लेकिन मुख्यतः उन्हे श्रृंगार भक्ति व नीति की त्रिवेणी का प्रवाहक माना जाता है बिहारी ने सतसई मे अलंकार रस भाव नायिकाभेद ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, गुण आदि को दृष्टिगत रखकर सुन्दर दोहे रचे हैं

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन मे करतु हैं नैननु ही सौं बात

"जन्म ग्वालियर जानिए खंड बुंदेले बाल
तरुणाई आई सुखद मथुरा बसि ससुराल ॥

नही पराग नही मधुर मधु नहि विकास यहि काल
अली कली ही सौं बंध्यो आगे कौन हवाल

रजि. न. 144/जयपुर/2008-09

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
मोबाइल : 9314618091
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

बिहारी की काव्यकला काव्य सौन्दर्य का वर्णन
बिहारी के दोहे सागर मे सागर से
बिहारी सफल मुक्तकार थे — मूल्यांकन कीजि
कल्पना की समाहार शक्ति एवं भाषा की समा

बिहारी

कलापक्ष

भाषा — ब्रजभाषा
काव्य गुण — माधुर्य गुण / प्रसाद गुण
छन्द →
अलंकार →
काव्य रूप
मुक्तक काव्य → बन्धन रहित रचना

(i) अभिव्यक्ति की सक्षमता
(ii) भाषा की सरलता
(iii) व्यंग्य वैभव
(iv) कल्पना की समाहार शक्ति
(v) शब्द योजना मे नाद सौन्दर्य
(vi) रस भरने की क्षमता
(vii) बिहारी की समाहार शक्ति

1) समास शैली → कम से कम शब्दों मे अधिक बात

भाव पक्ष

① श्रृंगार वर्णन
संयोग / वियोग
② भक्ति भावना
③ नीति वर्णन

र. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

देव :-

रीतिबद्ध धारा के कवि

→ इटावा के सनाढ्य ब्राह्मण

जन्म – 1673 ई.

→ पूरा नाम – देवदत्त था

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियो मे शायद सबसे अधिक ग्रन्थ रचना देव की है कोई इनकी रचना 52 व कोई 72 बतलाते है।

आचार्य शुक्ल कहते है → देव सा अर्थ सौष्ठव और नवोन्मेष विरले ही कवियो से मिलता है रीतिकाल के कवियो मे ये बड़े ही प्रगल्भ और प्रतिभा – सम्पन्न कवि थे इसमे सन्देह नही

रचनाएं → ① भावविलास ⑦ कुशलविलास
② अष्टयाम ⑧ देवचरित
③ भवानीविलास ⑨ प्रेमचन्द्रिका
④ सुजानविनोद ⑩ जातिविलास
⑤ प्रेमतरंग ⑪ रसविलास
⑥ रागरत्नाकर ⑫ काव्यरसायन / शब्दरसायन
⑬ सुखसागर तरंग
⑭ वृक्षविलास ⑮ पावसविलास
⑯ ब्रह्मदर्शन पचीसी ⑰ तत्वदर्शन पचीसी
⑱ आत्मदर्शन पचीसी ⑲ जगदर्शन पचीसी
⑳ रसानन्द लहरी (21) प्रेम दीपिका
(22) नख शिख (23) प्रेम दर्शन

रागरत्नाकर मे राग रागनियो के स्वरूप का वर्णन है अष्टयाम तो रात दिन के भोगविलास की दिनचर्या है जो मानो उस काल के अकर्मण्य और विलासी राजाओ के सामने कालयापन विधि का ब्योरा पेश करने के लिए बनी थी आचार्य व कवि दोनो रूपो मे हमारे सामने आते है

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

देव आचार्य कवि / शृंगार कवि
देव का काव्य सौन्दर्य /

कलापक्ष	आचार्यत्व	भाव पक्ष
① भाषा → साहित्यिक ब्रजभाषा	नायिका भेद	शृंगार व
② छन्द योजना → कवित्त / सवैया	नखशिख वर्णन	संयोग
③ अलंकार → शब्दालंकार, अर्थालंकार	ऋतु वर्णन	वियोग
④ बिम्बविधान	रस अलंकार	प्रकृति व
	शब्द शक्ति	भक्ति भा
	काव्य	
	पिंगल	
	नीति दर्शन	

देव का स्थान निर्धारण करो →

देव / केशव की साहित्यिक विशेषता
देव / बिहारी "
देव / सेनापति "
देव / पद्माकर "

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
मोबाइल : 9314618091
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

: सेनापति :-

सेनापति के जीवन के सम्बन्ध मे अधिक जानकारी नही मिलती है अभी तक इनकी एक ही कृति कवित्त रत्नाकर प्राप्त हुई है। इसी कृति से इनके बारे मे थोडी जानकारी मिलती है इसका जन्म बुलन्दशहर के अनूपशहर के आसपास हुआ इनके पितामह का नाम परशुराम दीक्षित व पिता का नाम गंगाधर दीक्षित था।

कवित्त रत्नाकर मे इन्होने अलंकार श्रृंगार षटऋतु रामायण व रामरसायन का वर्णन किया है।

* जन्म – 1646 के आसपास
* सेनापति ने ऋतुवर्णन बहुत सुन्दर किया
* इनके ऋतुवर्णन मे प्रकृति निरीक्षण पाया जाता है
* पद विन्यास भी इनका ललित है
* सेनापति भावुक और निपुण कवि थे

सेनापति का रचनाकाल भक्तिकाल और रीतिकाल के संधि स्थल मे पडता है

* सेनापति के ऋतु वर्णन सम्बन्धी रचनाएँ उनके कवित्व के उत्कर्ष का प्रमाण देती है।
* संस्कृत निष्ठ भाषा का प्रयोग

श्लेष के अतिशय मोह के कारण सेनापति का काव्य बोझिल और दुरुह भी हुआ है इसलिए कविता की गतिशीलता भी बाधित होती है तथापि सेनापति रीतिकाल के एक महत्वपूर्ण कवि है।